ROLL NO. .....

SIG. OF INVIGILATOR

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
(DEEMED UNIVERSITY)
RET AUG. - 2014

PART – III (CONCERN SUBJECT)
JAINOLOGY COMPARATIVE RELIGION AND PHILOSOPHY

NOTE :

1. All questions are compulsory and of objective type. / सभी प्रश्न अनिवार्य एवं वस्तुनिष्ठ हैं।
2. All questions carry equal marks. / सभी प्रश्नों के अंक समान है।
3. Only one answer is to be given for each question. / प्रत्येक प्रश्न का एक ही उत्तर देना है।
4. If more than one answer are marked, it would be treated as wrong answer. / एक से अधिक उत्तर देने की दशा में प्रश्न के उत्तर को गलत माना जायेगा।

68. भगवान ऋषभ देव यहाँ पर उत्पन्न हुए थे--
(अ) वाराणसी (ब) अयोध्या
(स) पाटलिपुत्र (द) वैशाली

( )

69. भगवान् पर्श्वनाथ से सम्बन्धित स्थान को पहिचानिये –
(अ) काशी (ब) मथुरा
(स) गिरनार (द) नालन्दा

( )

70. प्रारंभिक बौद्ध आगम ग्रन्थ (बुद्ध–वचन) जिस भाषा में प्राप्त होता है, वह है –
(अ) प्राकृत (ब) पालि
(स) अर्धमागधी (द) संस्कृत

( )

71. बौद्ध धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ हैं –
(अ) शील, समाधि और प्रज्ञा (ब) अणुव्रत और महाव्रत
(स) मनःपर्यय और केवल ज्ञान (द) अनेकान्तवाद और स्याद्वाद

( )

72. अजन्ता गुफा मन्दिर यहाँ पर स्थित है –
(अ) महाराष्ट्र (ब) बिहार
(स) कर्नाटक (द) गुजरात

( )

P.T.O.

73. सांची स्तूप यहाँ पर स्थित है–
(अ) कर्नाटक (ब) राजस्थान
(स) बिहार (द) मध्य प्रदेश

( )

77. जैन धर्म की अंतिम वाचंना यहाँ पर हुई थी –
(अ) पाटलिपुत्र (ब) उज्जीयनी
(स) वल्लभी (द) राजगीर

( )

75. 'आचारांगसूत्र' जैन आगमों में इस प्रकार का ग्रंथ है –
(अ) मूलसूत्र (ब) टीकाग्रन्थ
(स) कथा ग्रन्थ (द) अंग ग्रन्थ

( )

76. 'दशवैकालिकसूत्र' मुख्य रूप से इसका वर्णन करना है –
(अ) जैन मुनियों की आहारचर्या
(ब) दश प्रकार के धर्मों का वर्णन
(स) भगवान महावीर का जीवन चरित
(द) कर्म सिद्धान्त का स्वरूप

( )

77. आचार्य उमास्वामि ने इस ग्रन्थ की रचना की है–
(अ) नियमसार (ब) समराइच्चकहा
(स) तत्त्वार्थसूत्र (द) विपाकसूत्र

( )

78. जैन अध्ययन केन्द्र 'एल.डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डॉलाजी' इस नगर में कार्यरत है –
(अ) वारायणी
(ब) जैसलमेर
(स) श्रवणबेलगोला
(द) अहमदाबाद

( )

79. जैन धर्म के अनुसार द्रव्यों की संख्या है–
(अ) पाँच (ब) चार
(स) छह (द) तीन

( )

80. जैन धर्म के सात पदार्थों में यह सम्मिलित है–
(अ) अहिंसा (ब) द्रव्य
(स) धर्म (द) बंध

( )

P.T.O.

81. जैन धर्म के अनुसार ज्ञान का वर्गीकरण इस रूप में हुआ है–
(अ) सात प्रकार (ब) चार प्रकार
(स) तीन प्रकार (द) पांच प्रकार

82. ज्ञान के प्रकारों में यह सम्मिलित है– ( )
(अ) श्रुत (ब) निर्जरा
(स) अधर्म (द) अभय

83. जैनधर्म में 'जिन' शब्द का वास्तविक अर्थ है – ( )
(अ) जैन धर्म का साधु (ब) जैन धर्म का प्रतिपादक
(स) जैन धर्म को मानने वाला (द) इन्द्रिय–मन को जीतने वाला

( )

84. माउन्ट आबू के प्रसिद्ध जैन मंदिर इस नाम से जाने जाते है –
(अ) शान्तिनाथ मंदिर (ब) देलवाड़ा मंदिर
(स) गोम्मटेश मंदिर (द) शत्रुंजय मंदिर

85. यह शब्द पर्यावरण संरक्षण से अधिक जुड़ा हुआ है– ( )
(अ) शाकाहार (ब) फलाहार
(स) दुग्धाहार (द) मांसाहार

86. जैनधर्म में समस्त तीर्थकरों की संख्या स्वीकृत है – ( )
(अ) 24 (ब) 36
(स) 12 (द) 5

87. 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' प्रमुखरूप से इसका वर्णन करता है : ( )
(अ) जैनाचार (ब) कर्म–सिद्धान्त का स्वरूप
(स) दश प्रकार के धर्म (द) भगवान् महावीर के आध्यात्मिक वचन

88. 'परिपूर्ण ज्ञान' जैनधर्म में इस रूप में जाना जाता है : ( )
(अ) केवल ज्ञान (ब) शिक्षक का ज्ञान
(स) मुनि का ज्ञान (द) मति ज्ञान

89. जैन धर्म में 'अपरिग्रह' का अर्थ है : ( )
(अ) हत्या नही करना (ब) अनाग्रही चिन्तन
(स) अमूर्छाभाव (द) झूठ नहीं बोलना

( )

P.T.O.

90. जैनधर्म में "वस्तु का बहुपक्षीय चिन्तन" इस नाम से जाना जाता है :
(अ) अनेकान्तवाद (ब) केवलज्ञान (स) रत्नत्रय (द) अपरिग्रह ( )

91. जैनधर्म में 'चन्दनबाला' इस रूप में प्रसिद्ध है :
(अ) गिरनार के राजा की राजकुमारी
(ब) महिला छात्रावास की प्रमुख
(स) अशोक राजा की माता
(द) भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या ( )

92. मथुरा की जैन मूर्तियाँ प्रायः इस शताब्दी की है :
(अ) प्रथम शताब्दी ई. (ब) बारहवीं शताब्दी ई.
(स) द्वितीय शताब्दी ई.पू. (द) चतुर्थ शताब्दी ई. ( )

93. जैनधर्म में 'आस्रव' इसमें सम्मिलित है :
(अ) त्रिरत्न (ब) षड्द्रव्य (स) सप्त तत्त्व (द) पंच व्रत ( )

94. तत्त्वार्थ सूत्र की भाषा है :
(अ) संस्कृत (ब) प्राकृत (स) अपभ्रंष (द) पालि ( )

95. पाँच महाव्रतों का पालन इनके लिये अनिवार्य है :
(अ) श्रावक (ब) साध्वी (स) मुनि (द) पण्डित ( )

96. गमन क्रिया में सहायता देना इस द्रव्य का प्रमुख लक्षण है :
(अ) धर्म द्रव्य (ब) अधर्म द्रव्य (स) काल द्रव्य (द) आकाश द्रव्य ( )

97. त्रि–रत्न का वर्णन इस ग्रन्थ में है :
(अ) समयसार
(ब) षड्दर्षन समुच्चय
(स) समराइच्चकहा
(द) तत्त्वार्थ सूत्र ( )

98. स्याद्वाद का अपरनाम है :
(अ) अनेकान्तवाद
(ब) सप्तभंगी
(स) पंचयाम
(द) उपनय ( )

P.T.O.

99. अभयदान इस समूह में सम्मिलित है :
(अ) पाँच प्रकार के व्रत
(ब) षड्द्रव्य
(स) रत्नत्रय
(द) चतुर्विध दान

( )

100. जैन धर्म के अनुसार एकेन्द्रिय जीवों की सुरक्षा का दूसरा नाम है :
(अ) षड्द्रव्य
(ब) पर्यावरण सुरक्षा
(स) सप्त–तत्त्व
(द) गुणस्थान

( )

●●●